यही समय को समझकर जी लो।

बादल बरस लिए थे। मेघों की छायाएँ आसमान में घूम रहे थे। सूर्य की रोशनी में खेतों बहुत खुबसुरत लगी। रोहन सुबह होने से भी अपनी कमरे में सो रहे थे। उसका बाप गुस्सा से उसका कमरे में आया और उसको उठा। रोहन का एक गरीब परिवार था। रोहन का पिता का काम्म पर वह परिवार चल रहा था। रोहन को बचपन में क्रिकट खेलने को बहुत इच्छ था और वह अपनी स्कूल की क्रिकट डीम में केपटेन था। लेकिन वह पढने में अच्छ नहीं थी। उसका पिता को उसे एक डॉक्टर बनने का बडा इच्छ था और इसलिए वह रोहन की स्कूल के बाद उसे क्रिकट नहीं खेलने कोलिए अनुमति नहीं दिया। वह रोहन को एक कोचिंइ सेंटर में बेज दिया। इसके कारण एक बडी डीम का सेलक्शन में जाने को नहीं किया। इसके बाद वह अपनी पिता से कुछ बात नहीं बोला। रोहन अपनी इच्छ के विरुध उस सेंटर में रोज चला लेकिन वह कभी-भी खुशी न थी।

सुबह से बाप गुस्से होने से रोहन बहुत दुःख थी। अपनी बेटा और पति के बीच का यह प्रश्न देखकर माँ बहुत दुःख थी। जब रोहन सेंटर से घर में पहूँचा तब उसकी माँ उसे एक खत दिया। माँ वह खत नहीं खुला इससे उसको उस खत में क्या है वह नहीं जानता था। रोहन अपनी कमरे में जाकर वह खत खुला। उस खत में एक क्रिकट सेलक्शन का विवरण था। उसको खुश लगा लेकिन

तब वह अपनी बाप के बारे में सोचा तब उस खुश गया। कई समय के सोचने के बाद वह इस सेलक्षन में जानने को तैयार कि। अगला दिन बहुत खुशी से वह सेंटर में जाने कहकर उस सेलक्षन में गया। कोई प्राक्टीस के बिना उसे स्कू सेलक्षन मिला। लेकिन वह इस बात को अपनी माँ-बाप को नहीं कहा। वह हर दिन सेंटर में जाने के बाद क्रिकट खेलने को गया। तीन महीने के बाद उसका पहला मेच् में उसको सौ रण्स् मिला और इस मेच् में उसका टीम विजय हो गया। मेच के बाद अपनी मित्र को अस्पताल बेजने केलिए वह अस्पताल गया इस समय वह अपनी पिता को देखा। एक इस अस्पताल में काम करने वाला एक व्यक्ति के मदद से वह समझ गया कि बाप हर महीने अस्पताल में कोई चेकप केलिए आता था। लेकिन वह इसके बारे में नहीं सोचा क्योंकि उसको कल इंदया इंदया की क्रिकट टीम का सेलक्षन था। वह घर पहूँचने से भी अपनी पिता से नहीं बात किया।

वह अगला दिन जल्दी से उठा और माँ-बाप से कोई बात न कहकर चलने केलिए तैयार कि लेकिन उसके माँ वह क्रिकट खेलने में जाने का बात समझा और उससे बहस कर दिया। उसको इसी दिन में एक परीक्षा थी। वह यह परीक्षा में नहीं जाने को ज़िद कर दिया और गुस्सा से सेलक्षन को गया। उसको सेलक्षन मिला और खुश से अपनी मित्र राहुल के पास जाकर धन्यवाद माँग दिया

लेकिन राहुल ने आशचर्य से कारण पूछा । रोहन ने सब बात कहा । राहुल सब सुनने से कहा " उस खत में नहीं तुम्हें दिया, वह खत तुम्हारी पिता ने मुझसे देकर तुझे देने को कहा । रोहन को बहुत आशचर्य लगा और दु:ख भी । वह जलदी से अपनी पिता को देखने केलिए गया, लेकिन उसके घर में कोई भी नहीं था । वह जब अपनी फोन को देखा जब कई कॉल देखा तब वह अपनी माँ को फोन से पूछा 'क्या हुआ ?' वह बहुत परेशान से सारी बात को कहा, रोहन के पिता को एक अट्टाक् हुआ और असपताल में था । रोहन जलदी से असपताल गया, उस सारी समय में उसका मन में फिर अपनी पिता के याद था । उसको अपनी गलत समझा । असपताल पहूँचने से वह अपनी पिता के पास मॉफ माँग दिया और अपनी गलत के बारे में कहा । रोहन कई बार मॉफ माँग दिया, पिता ने रोहन से कह कि " बेटा मुझे मॉफ दे दो । मैं तुम्हें तुम्हारी मंज़िल मिलने को नहीं दिया । मुझे फिर इतना इच्छा था कि तुम एक बडी जगह पर पहूँचा, लेकिन तब मैं तुम्हारी मंज़िल के बारे में बूल गया । मेरा समय हो चुका है, अब मैं चले जाऊँगा ।" इतनी बात कहकर रोहन के सामने वह मर गया । रोहन बहुत दु:ख हुआ । उसका सब परिवार बहुत दु:ख हुआ और उस परिवार को जीने केलिए पैसा न थी इसलिए वह कैंप की प्रक्टीस में छुट्टी माँगकर वह कोचिंग को गया और उसके बाद की कुछ समय में वह छोटा-छोटा काम को

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

गया। लेकिन उसके मन का मंज़िल ~~श्रि~~ फिर वहीं था।

एक दिन उसको क्रिकट की कैंप से उसका कोच्छ उसे मिलने केलिए आया और एक बड़ा मेच के बारे में कहकर उसे वह मेच में खेलने केलिए कहा। लेकिन उसी दिन उसको एक परीक्षा था। अगर वह उस परीक्षा में पास होगा तो उसे कोलेज में जाने का मौका मिलेगा। रोहन बहुत दुःख हुआ। जब दोनों बात कर रहे थे तब ~~उस~~ कोच्छ ने रोहन के पिता की चित्र देखा और आशचर्य से पुच्छा "यह ही तुम्हारा पिता?" फिर वह उससे कहा कि "रोहन की पिता कोच्छ की क्रिकट टीम में था और वह बहुत अच्छे से खेलता था। ~~ल~~ लेकिन उसका परिवार की स्थिति से वह क्रिकट छोड दिया। वह पूरा समय सोच दिया कि उसका परिवार का यह स्थिति के कारण क्रिकट है और क्रिकट उसका जीवन की पूरा समय को तोड दिया।" यह सब सुनकर रोहन को अपनी पिता क्रिकट छोड़ने को नहीं पसंद करने का कारण समझा। वह अपनी कोच्छ से कहा कि "मैं सोचकर जाऊँगा।" कोच्छ जानने से पहला कहा कि "तुम्हारा पिता को उसका सोच ~~गलत है मर~~ का गलत मरने का पहले समझा। समय तुम्हारी इच्छा के अनुसार नहीं रुकेगा। समय के अनुसार अपनी मंज़िल को सफल करना तुम्हारी दायित्व है।" यह कहकर कोच्छ ने गया। ~~उस~~ रोहन के मन में प्रश्न का हलचल हो रहा था। वह अपनी पिता के ~~म~~ अंत्य के बाद पहली बार उसके कमरे में गया। वहाँ रोहन का एक चित्र था उसके

पीछे में उसे एक खत मिला, वह खत उसकेलिया उसका पिता लिख दिया था। वह उस खत खुला और पढ़ा,

"प्रिय बेटा,

मैं तुमसे कुछ बात कहना चाहता हूँ। जब तुम एक दिन अस्पताल जब में तुम्हें देखा। लेकिन मैं तुमसे इसके बारे में नहीं पूछा क्योंकि मेरा बीमारी के बारे में तुम जाने का मुझे कोई इच्छा नहीं थी। जब तुम यह पढ़ेंगा तब मैं यहाँ होना नहीं होगा। तुम मेरी मृत्यु से मत दुःख लगा क्योंकि यह तुम्हारी कारण से घर होगा। तुम अच्छी तरह खेलकर बड़ी क्रिकटर बनो, उसी क्रिकटर में बनने केलिया इच्छा। मेरा समय खतम हो गई है। लेकिन तुम आज केलिया जी लो कल केलिया नहीं। "तुम ज़रूर अच्छी जगह पर पहुँचो।"

तुम्हारी पिता"

यह खत पढ़ने से वह मेच में खेलने केलिया तैयार कि।

मेच का दिन में वह अपनी माँ की आशीर्वाद से खेलने केलिया गया और अपनी पिता की इच्छा को सोचकर खेला। वह उस मेच से इंदय की टीम में जाने का मौका मिला। कई साल के बाद वह अपनी पिता सोचा जैसी क्रिकटर बन गया। एक इंटरव्यु में वह अपनी जीवन की कहानी के बारे में कहा और उसका जीवन कई लोग को सही समय का मूल्य को पढ़ने केलिया संदेश दिया।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)